विस्तार बुलेटिन क्रमांक : 06 (2022)

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

बीजीय मसाला

उन्नत प्रजातियाँ, उत्पादन क्षमता एवं परिपक्वता अवधि

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र
तबीजी, अजमेर - 305206
दूरभाष - 0145-2684401, 2684402
फेक्स - 0145-2684417
बेवसाईट - www.nrcss.icar.gov.in

icarnrcssajmer
icarnrcss
Seed Spices Info

धनिया की प्रजातियाँ

अजमेर धनिया - 1

यह प्रजाति राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर के द्वारा विकसित की गई है। इस किस्म के पौधे लंबे, बीज आकार में मध्यम एवं गोल होते हैं। तथा इस के बीज में 0.6 प्रतिशत वाष्पशील तेल की मात्रा पाई जाती है। पत्तियों और बीज के उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 12.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म लोंगीया रोग के लिए प्रतिरोधी है एवं छाछ्या रोग के प्रति सहनशील हैं। यह किस्म बेमौसमी पत्ती उत्पादन के लिए भी उपयुक्त है।

अजमेर धनिया - 2

इस किस्म के पौधे अर्द्ध खड़े होते हैं, बीज आकार में मध्यम होता है, बीज आकार अंडाकार होता है और निर्यात के उद्देश्य के लिए उपयुक्त होता है। यह किस्म पत्तियों और बीज उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इसके बीज में 0.54 प्रतिशत वाष्पशील तेल की मात्रा पाई जाती है। औसत उपज 12.9 क्विंटल/हेक्टर। यह किस्म लोंगीया रोग के लिए प्रतिरोधी एवं पाउडर फफूंदी के प्रति सहनशील हैं। यह किस्म गर्मी के मौसम के दौरान पत्तियों के लिए भी उपयुक्त है।

अजमेर धनिया - 3

यह लम्बी अवधि वाली प्रजाति है तथा इसे बीज व पत्तियों दोनों के लिये उगाया जा सकता है। यह निर्यात के लिये उपयुक्त है। इसकी उपज 12.5 क्विंटल प्रति हैक्टर है। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 0.5-0.6 प्रतिशत तक होती है। यह तना सूजन व छाछ्या रोग के लिये प्रतिरोधी है।

अजमेर हरा धनिया - 1

इस किस्म में सबसे लंबी आधारीय पत्तियां पाई जाती हैं इसलिए यह किस्म पत्ती के उद्देश्य के लिए उपयुक्त है। पत्ती उपज 7432.43 किलो/हे.। पत्ती में आवश्यक तेल 0.05 प्रतिशत होता है, बीज में आवश्यक तेल 0.36 प्रतिशत तक पाया जाता है।

मेथी की प्रजातियाँ

अजमेर मेथी -1

यह किस्म 137 दिन में पक कर तैयार होती है। इसके दाने बड़े आकार के तथा कम कड़वे होते हैं। इसकी उपज 20 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

अजमेर मेथी - 2

यह किस्म 140-145 दिन में पक कर तैयार होती है। इसके दाने बड़े आकार के तथा अधिक कड़वे होते हैं। इसकी उपज 18-20 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

अजमेर मेथी - 3

इस किस्म को शुद्ध रेखा चयन विधि के माध्यम से विकसित किया गया है। बीज बड़े तथा फसल परिपक्व होने में 137 दिन लेती है, औसत बीज उपज 13.77 क्विंटल/हेक्टर देती है। बीज में 1.79 प्रतिशत डायजेजेनिन और 0.97 प्रतिशत हाइडोक्सी-आइसोल्यूसिन पाया जाता है। यह किस्म पाउडर फफूंदी और रूट गलन के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।

अजमेर मेथी - 4

बीज बोल्ड और बड़े हैं। फसल परिपक्व होने के लिए 122-130 दिन लेती है, औसत बीज उपज 19.25 क्विंटल / हेक्टर देती है। बीज में 1.74 प्रतिशत डायजेजेनिन और 0.94 प्रतिशत हाइडोक्सी- आइसोल्यूसिन पाया जाता है। यह किस्म छाछ्या रोग और रूट गलन के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।

अजमेर मेथी - 5

बीज बोल्ड और बड़े हैं। फसल परिपक्व होने के लिए 106-141 दिन लेती है, औसत बीज उपज 17.21 क्विंटल / हेक्टर है। अजमेर मेथी-5 के बीज में उच्च एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं (66.4 मिलीग्राम/ बीएचटीई / पीपीएम) यह किस्म पाउडर फफूंदी और अल्टरिया ब्लाइट के लिए प्रतिरोधी है।

सौंफ की प्रजातियाँ

अजमेर सौंफ - 1

इसका पौधा बड़ा तथा शाखाओं युक्त होता है जिस पर बड़े आकार के पुष्पछत्रक होते हैं। इसके दाने बोल्ड होते हैं। यह किस्म 180-190 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म सीधी बुवाई तथा पौध रोपण विधि द्वारा क्रमशः 19 एवं 25 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है।

अजमेर सौंफ - 2

इसके पौधे खड़े और लंबे होते है, बड़े आकार के छत्रक होते हैं। रबी मौसम के दौरान 17.9 क्विंटल / हेक्टर की औसत उपज देती है। इसके बीज में 1.9 प्रतिशत आवश्यक तेल और 57.5 प्रतिशत एनीथोल +

एस्टिरगोल होता है। इस किस्म में रेमूलेरिया और अल्टरेरिया ब्लाइट के लिए सहिष्णुता है।

अजमेर सौंफ - 3

इस किस्म का विकास राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 2018 में किया गया। इसका पौधा बड़ा तथा शाखाओं युक्त होता है जिस पर बड़े आकार के पुष्पछत्रक होते है। इसके दाने बोल्ड होते हैं। यह किस्म 170-180 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म सीधी बुवाई द्वारा 24 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है। इसमे 1.9 प्रतिशत वाष्पशील तेल की मात्रा पायी जाती है। यह किस्म रूमलेरिया ब्लाइट के प्रति मध्यम सहनशील है।

अजवाइन की प्रजातियाँ

अजमेर अजवाइन - 1

यह किस्म 165 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 14 क्विंटल प्रति हैक्टर है। इसमे वाष्पशील तेल की मात्रा 3.4 प्रतिशत पायी जाती है।

अजमेर अजवाइन - 2

यह बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त है। यह लगभग 147 दिनों में पक जाती है। बीज उपज 10.12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर। बीजों में आवश्यक तेल की मात्रा 3.0 प्रतिशत होती है।

अजमेर अजवाइन - 93

यह किस्म 120-130 दिनों में परिपक्व होती है। यह राजस्थान के सभी हिस्सों के लिए उपयुक्त है। इस अजवाइन किस्म की औसत उपज 10-12 क्विंटल /हेक्टर है। रबी मौसम में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का पहला सप्ताह है और खरीफ सीजन जुलाई के मध्य से अगस्त के मध्य सप्ताह तक है। इस किस्म में 3.8 प्रतिशत वाष्पशील तेल है।

अजमेर अजवाइन - 73

यह मध्यम अवधि (160-170 दिन) और अधिक उपज देने वाली किस्म है। बीज उपज 1066.08 किलो प्रति हेक्टेयर तथा बीजों में आवश्यक तेल की मात्रा 6.38 प्रतिशत होती है। यह किस्म जड़ सड़न और स्क्लेरिटियम संड़ाध के प्रति उच्च सहनशीलता दिखाता है।

सुवा की प्रजातियाँ

अजमेर सुवा - 1

यह यूरोपीय प्रकार के सुवा की एक किस्म है, जो 134 सेमी की ऊंचाई तक बढ़ती है और इसके बीज परिपक्वता तक पहुंचने में लगभग 142 दिन लगते हैं। यह पाउडर फफूंदी के लिए अतिसंवेदनशील है लेकिन ब्लाइट के लिए प्रतिरोधी है। बीज में लगभग 3.5 प्रतिशत आवश्यक तेल होता है। 14 क्विंटल/हेक्टर की औसत बीज उपज सिंचित दशा में प्राप्त की जा सकती है।

अजमेर सुवा - 2

यह भारतीय सुवा की एक उन्नत किस्म है। यह किस्म बारानी खेती, असिंचित क्षेत्रों तथा कम पानी में भी अच्छी पैदावार देती है। इसमे वाष्पशील तेल की मात्रा 3.2 प्रतिशत पायी जाती है।

कलौंजी की प्रजातियाँ

अजमेर कलौंजी - 1

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा विकसित की गई है तथा अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिये उपयुक्त है जो लगभग 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है तथा वाष्पशील तेल की मात्रा 0.7 प्रतिशत है।

अजमेर कलौंजी - 20

यह प्रजाति राष्ट्रीय बीजीय अनुसंधान केन्द्र, अजमेर के द्वारा विकसित की गई है। यह 140-150 दिनों में परिपक्व होती है। यह राजस्थान के सभी हिस्सों के लिए उपयुक्त है। इस किस्म की औसत उपज 10-12 क्विंटल/हेक्टर है। इसकी बुवाई का उचित समय 15-30 अक्टूबर है। इस किस्म में 28.08 प्रतिशत कुल तेल पाया जाता है।

सेलरी की प्रजातियाँ

अजमेर सेलरी - 1

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर से हाल ही में यह किस्म विकसित होकर ए.आई. सी.आर.पी. के अन्तर्गत अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में खेती

हेतु अनुमोदित की गई है। इस किस्म से 8-12 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की उपज प्राप्त कर सकते है तथा बीजों में 2.4 प्रतिशत तेल की मात्रा पाई जाती है।

अजमेर सेलरी - 2

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर से हाल ही में यह किस्म विकसित होकर ए.आई.सी.आर.पी. के अन्तर्गत अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में खेती हेतु अनुमोदित की गई है। इस किस्म से 10-12 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर की उपज प्राप्त कर सकते हैं तथा बीजों में 6.74 प्रतिशत तेल की मात्रा पाई जाती है।

विलायती सौंफ (एनाइस) की प्रजातियाँ

अजमेर एनाइस - 1

यह किस्म 170-180 दिनों में पक जाती है। बीज उपज 7.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा इसके बीजों में 3.2 प्रतिशत की उच्च वाष्पशील तेल सामग्री होती है।

संकलन एवं संपादन : डॉ. आर.एस.मीना, डॉ. श्याम सुंदर मीना, डॉ. शारदा चौधरी, डॉ. रवि वाय. एवं एस.के. बागड़ा
तकनीकी मार्गदर्शन : डॉ. एस.एस. मीणा, डॉ. शिवलाल, डॉ. मुरलीधर मीणा, श्री पी.के. अग्रवाल
प्रकाशक : डॉ. एस.एन. सक्सेना, निदेशक
डीबीटी परियोजना के अंतर्गत कृषकों के हित में प्रकाशित